Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper III, Indian Logic (BA Part II Honours)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 02, Oct.
October 12, 2020

BA Part II Honors

अनुमान और इनफ्रेंस

प्रायः 'अनुमान' पद का अंग्रेजी अनुवाद 'इन्फ्रेंस' शब्द से किया जाता है। परंतु इन शब्दों को पर्यायवाची नहीं समझना चाहिए। अनुमान और इंनफरेंस की धारणाओं में भारतीय और पाश्चात्य मतानुसार अनेक भेद हैं।

भारतीय दर्शन में अनुमान का अर्थ है व्याप्ति पर आधारित ज्ञान। व्याप्ति वह वाक्य है जहां अनुमान के वृहद् पद और मध्य पद के बीच सामान्य संबंध स्थापित किया जाता है। पाश्चात्य तर्कशास्त्र के अनुसार अनुमान के दो भेद बताते हैं -- आगमन और निगमन। पुनः निगमन के दो भेद हैं-- साक्षात निगमनात्मक अनुमान तथा मध्याश्रित निगमनात्मक अनुमान। इन तीन प्रकार के अनुमानों-- आगमन, साक्षात अनुमान तथा असाक्षात् अनुमान में मात्र मध्य आश्रित निगमनात्मक अनुमान ही ऐसा है जो व्यप्ति (जिसकी तुलना पाश्चात्य दर्शन के वृहत वाक्य से की जा सकती है) पर आधारित है। इस प्रकार भारतीय दर्शन में अनुमान की अवधारणा पाश्चात्य दर्शन के निगमनात्मक मध्याश्रित अनुमान से मिलती जुलती है।

पाश्चात्य दर्शनिको ने जिसे साक्षात अनुमान कहा है, उसमें व्याप्ति नहीं होती। भारतीय दार्शनिक उस प्रमाण को अनुमान की कोटि में नहीं रखते जिसका आधार व्याप्ति न हो। इस दृष्टि से पाश्चात्य दर्शन का साक्षात अनुमान को भारतीय दार्शनिकों ने के अनुसार अनुमान की कोटि में नहीं रखा जाना चाहिए। कतिपय पाश्चात्य दार्शनिक भी साक्षात् अनुमान को अनुमान की कोटि में नहीं रखते, क्योंकि उनके अनुसार साक्षात् अनुमान में जिसे आधार वाक्य और निष्कर्ष की संज्ञा दी जाती है उन्हें मात्र शब्दों का ही भेद होता है।

किंतु अगर साक्षात् अनुमान को अनुमान की कोटि में रखा जाए तो पाश्चात्य दार्शनिकों की अनुमान संबंधी अवधारणा भारतीय दार्शनिकों के अनुमान संबंधी अवधारणा से अधिक व्यापक समझी जानी चाहिए।

पुनः पाश्चात्य दर्शन में समस्त प्रत्यक्षेतर ज्ञान को अनुमान की कोटि में रख दिया जाता है, जबकि भारतीय दार्शनिक प्रत्यक्षेतर ज्ञान की कोटि में शब्द, अनुमान, उपमान, शब्द, उपलब्धि आदि को भी स्वीकारते हैं जो समस्त अनुमानों से इतर है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 02, Oct.
October 12, 2020

वेदांत न्याय तथा पाश्चात्य मध्याश्रित अनुमान की आकृति में महत्वपूर्ण समानताएं देखने को मिलती है। पाश्चात्य दार्शनिक न्याय के तीन चरण बताते हैं-- वृहद् वाक्य, लघुवाक्य और निष्कर्ष वाक्य। उदाहरण के लिए

जहां जहां दुआ है वहां वहां आग है-- वृहत वाक्य
पर्वत पर धुआँ है।-- लघुवाक्य
पर्वत पर आग है।-- निष्कर्ष।

वेदांत न्याय से इसकी तुलना करने पर ऐसा दृष्टिगत होता है कि वृहद् वाक्य उदाहरण की जगह, लघुवाक्य को उपनय या हेतु के स्थान पर तथा निगमन या प्रतिज्ञा को निष्कर्ष के स्थान पर रखा जा सकता है। इसी भाँति ऐसा लगता है कि पाश्चात्य दार्शनिक जिसे वृहद् पद कहते हैं उस वेदांती साध्य, लघुपद को पक्ष तथा मध्यपद को हेतु कहते हैं। चूंकि भारतीय और पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा में आधारभूत भेद है अतएव इन दोनों ज्ञानमीमांसाओं के मूल पदों को दूसरी भाषा के मूल पदों से स्थानांतरित करने में अवधारणात्मक दोष की प्रबल संभावना होती है। अतएव इन पदों का अनावश्यक भाषांतरण उचित नहीं है।